काशिकावृत्ति एवं वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के उदाहरणों का सांस्कृतिक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी–एच०डी० की
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की
प्रस्तावित–रूपरेखा
२०१४

निर्देशक

डॉ० अभिमन्यु
असि० प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
कला संकाय, डी०ई०आई०
दयालबाग़, आगरा

शोध–छात्रा

भावना सिंह
एम०ए०,
एम०फिल्०(संस्कृत)

अध्ययन क्षेत्र– 'संस्कृत व्याकरण'

विभागाध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख

प्रो० (श्रीमती) उर्मिला आनन्द
संस्कृत–विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)
दयागबाग़, आगरा–२८२००५

'प्रधानं च षडङ्गेषु व्याकरणम्' अर्थात् वेदाङ्गों में व्याकरण शीर्षस्थानीय है। आचार्य पाणिनि ने अपने समय में प्रचलित समस्त शब्दों का साधुत्व प्रतिपादन करने हेतु अपनी उपज्ञा से लगभग ४००० सूत्रों में **'अष्टाध्यायी'** का निर्माण किया। कालान्तर में जब कुछ शब्द प्रचलन से बाहर हो गए तथा नए शब्द प्रचलन में आए तो उन शब्दों के भी साधुत्व प्रतिपादनार्थ कात्यायन ने वार्तिकों का निर्माण किया तथा कालान्तर में पतञ्जलि ने भी इस कार्य में अपना योगदान दिया। इस तरह इन तीन मुनियों के ग्रन्थों में भाषा का व्याकरण एक निश्चित सिद्धान्त पर पहुँच गया, किन्तु जब संस्कृत जनभाषा से च्युत होकर विशिष्ट–भाषा बन गई, तब भाषा के व्याकरण की अध्ययन–अध्यापन की रीति बदली और अनेक वृत्ति–ग्रन्थ एवं टीका–ग्रन्थों का निर्माण होने लगा तथा अध्ययन–अध्यापन की रीति में पाणिनि क्रम न होकर प्रक्रिया–क्रम का भी आविर्भाव हुआ। इस तरह पाणिनि–क्रम के सन्दर्भ में वामनजयादित्यविरचित **'काशिकावृत्ति'** जिसका रचनाकाल ५५० ई0 से ६४० ई0 है तथा भट्टोजीदीक्षित रचित **'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी'** जिसका रचनाकाल १५६० ई0 से १६१० ई० है, महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

वृत्तिकार होते हुए भी काशिकाकार ने उन शब्दों के समाधान का भी सफल प्रयास किया जो कि पाणिनीय सूत्रों द्वारा असमाधित थे, जिनकी ओर कात्यायन एवं पतञ्जलि का भी ध्यानाकृष्ट न हो पाया था। यथा–**भुवश्च (३/२/११८)** सूत्र पर काशिकाकार कहते हैं–**'चकारोऽनुक्तसमुच्चयार्थः। भ्राजिष्णुना लोहितचन्दनेन।'** भाष्य में इस विषय में कुछ नहीं कहा गया है। ऐसा अनेक स्थलों पर है। नवीन शब्दों के समाधानार्थ काशिकाकार ने अनेक वार्तिकों तथा इष्टियों का निर्माण भी किया है। यथा–**सूत्र १/१/१२** पर इन्होंने **'ईदादीनां प्रगृह्यत्वे मणीवादीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः'** वार्तिक लिखा है। भाष्यादि ग्रन्थों में यह

वार्तिक उपलब्ध नहीं है। इतना ही नहीं काशिकाकार का तो यह उद्घोष है कि–

"व्याकरणस्य शरीरं परिनिष्ठितशास्त्रकार्यमेतावत्।

शिष्टः परिकरबन्धः क्रियतेऽस्य ग्रन्थकारेण।।"

प्रस्तुत पंक्तियों मे काशिकाकार ने व्याकरण को पाणिनीयसूत्र रूपी आत्मा का शरीर कहा है। वे कहते हैं कि "**व्याकरण के शरीर रूपी इस काशिका में व्याकरण का कार्य समाप्त हो गया है।**"

वहीं एक ओर पाणिनीयव्याकरण–परम्परा के अनुयायी प्रक्रिया ग्रन्थों में श्रीभट्टोजिदीक्षित विरचित वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी का एक विशिष्ट स्थान है, जिसमें कि न केवल पाणिनीयाष्टक के समस्त सूत्रों का प्रक्रियानुसार उल्लेख मिलता है अपितु भाष्य इष्टियों के माध्यम से व्याकरण की परम्परा ने विस्तार को प्राप्त किया है। प्रक्रिया–कौमुदी को भी तिरस्कृत कर यह कौमुदी पाणिनि के प्रायः सभी सूत्रों को अन्तर्निहित करती है। पाणिनि के ग्रन्थ के समस्त सूत्र सिद्धान्तकौमुदी के उदाहरण प्रत्युदाहरण के साथ व्याख्यात एवं समीक्षित हैं। उदाहरणों के रूप में काशिकावृत्ति का सराहनीय योगदान रहा। काशिका के व्याख्याता हरदत्त मिश्र तो यहाँ तक कहते हैं कि काशिका में उद्धृत कतिपय उदाहरण चिरन्तन प्रयोग हैं–**'तथा च पदमञ्जर्यामुक्तम्–**

(क) "अप्रसिद्धोदाहरणम् चिरन्तन प्रयोगात्"

पदमञ्जरी (२/१/६)

(ख) "अवतप्तेनकुलस्थितम् तवैतदिति चिरन्तनप्रयोगः।"

पदमञ्जरी (२/१/४७)

प्राक्तन कार्य

काशिकावृत्ति एवं वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी पर अनेक शोध–कार्य किए गए हैं, जिनकी सूची मैं आगे संलग्न कर रही हूँ, जिसके लिए मैंने विविध विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों एवं इन्टरनेट का आश्रय लिया।

(क) **Bhattoji Dixita : Contribution to Sanskrit Grammar**.

Researchar- Balli, Suryakant १९७१

(ख) **'प्रक्रियाकौमुदी और सिद्धान्तकौमुदी का तुलनात्मक अध्ययन'**

शोधकर्त्री–गाँधी,पुष्पा १९७३

(ग)**'Comparative study of the books Kashika and Siddhanta Kaumudi'**

Researcher-Jha,Givinda, १९७६

(घ) **'Critical analysis of the examples used in the book Kashika'**

Reseacher-Jha, Krishna Deo, १९७६

(ङ)**'Comparative study of the views of Bhattoji Dixita and Nagesh Bhatta'**

Researcher-Mr.PranMohan, १९७८

(च) **'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी–एक समीक्षात्मक अध्ययन'**

शोधकर्ता–शर्मा, ओ.जी.एल. १९७९

(छ) **'पाणिनिकालीन भारतवर्ष'**

लेखक–अग्रवाल, वासुदेव शरण १९९१

(ज)'वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी प्रोक्त चिन्त्य प्रयोगाणां समीक्षा'

शोधकर्ता–झा,परमानन्द २००२

(झ) 'पतञ्जलिकालीन भारतवर्ष'

लेखक–अग्निहोत्री, प्रभुदयाल २००७

मेरे संज्ञान में काशिकावृत्ति एवं सिद्धान्तकौमुदी के समस्त उदाहरणों को आधार बना कर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। अतः **'ग्रन्थद्वय के उदाहरणों का सांस्कृतिक अध्ययन'** इस विषय पर मैं अपना शोध–कार्य करना चाहती हूँ।

संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति

सम् + कृ (धातु) + सुटागम + क्तिन् (ति) प्रत्यय के योग से **संस्कृति** शब्द व्युत्पन्न होता है, जिसका अर्थ है–**'परिष्कार करके सम्यक् रूप से किए हुए कार्य'।** जिनका सम्बन्ध मनुष्य के शरीर, प्राण, मन, बुद्धि आदि से है। जिनके द्वारा मनुष्य के मानवीय गुणों का दिग्दर्शन होता है। संस्कृति एक सामाजिक विरासत है, जो एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी तक निरन्तर चलती रहती है, वर्तमान पीढ़ी को इसे प्रयासपूर्वक आने वाली पीढ़ी को सिखाना पड़ता है। जब बात संस्कृति की हो तो संस्कृति से सम्बद्ध प्रत्येक पक्ष को दृष्टिगत रखते हुए विवरण प्रस्तुत किया जाता है। संस्कृति के अन्तर्गत भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं राजनीतिक आदि विविध पक्षों का अध्ययन किया जाना अनिवार्य है क्योंकि हमारे आचरण, खान–पान, वेश–भूषा, साहित्य, कला, दर्शन, सामाजिक व राजनैतिक संगठन, शिक्षा, विज्ञान, इतिहास आदि में अर्थात् हमारे व भारत राष्ट्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में संस्कृति झलकती है, अतः प्रत्येक पहलू को आधार बनाना उपयुक्त रहेगा।

पाणिनि आदि वैयाकरणों ने भी अपने ग्रन्थों में सामाजिक व्यवस्था का वर्णन किया है, जिसका उदाहरण में **स्थालीपुलकन्यायेन** अपने पी–एच0डी0 के शोध–प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा तैयार करने हेतु प्रस्तुत कर रही हूँ। यथा–**'भाषायां सदवस श्रुवः'** (अष्टाध्यायी–३/२/१०८) इस सूत्र पर भाष्य में दिए गए उदाहरण से केवल इतना ही पता चलता है कि कौत्स पाणिनि के शिष्य थे **'उपसेदिवान् कौत्सः पाणिनिम्'** (महाभाष्य–३/२/१०८) किन्तु इसी सूत्र पर काशिका में दिए गए उदाहरण से यह प्रकाश भी पड़ता है कि कौत्स ने पाणिनि से अध्ययन किया था। **'उपशुश्रूवान् कौत्सः पाणिनिम्'** (काशिका– ३/२/१०८) इसी सूत्र पर सिद्धान्तकौमुदी में **'निषेदुषीमासनबन्धधीरः'** यह उदाहरण प्राप्त होता है।

क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः (अष्टाध्यायी–५/२/९२) सूत्र पर काशिकाकार ने उदाहरण द्वारा पारदारिक को निगृहीतव्य कहा है–......अथवा **क्षेत्रियः पारदारिकः। परदाराः परक्षेत्रम्। तत्र चिकित्स्यो निगृहीतव्यः।** (काशिका–५/२/९२), वहीं सिद्धान्तकौमुदी में इसी सूत्र पर **'क्षेत्रियो व्याधिः। शरीरान्तरे चिकित्स्यः, अप्रतिकार्यं इत्यर्थः,** यह उदाहरण मिलता है।

काशिका में **'कर्मणि द्वितीया'** (१/३/२) **हीने** (१/४/८६) आदि सूत्रों पर **'कटं करोति', 'उपशाकटायनं वैयाकरणाः'** उदाहरण प्राप्त होते हैं किन्तु सिद्धान्तकौमुदी में **हरिं भजति** तथा **अनुहरिं सुराः** , **हरेर्हीना** इत्यर्थ प्राप्त होते हैं।

काशिकावृत्ति एवं वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के उदाहरणों के सांस्कृतिक–विवेचन के आधार पर मै यह कह सकूँगी कि व्याकरणिक ग्रन्थ हो या साहित्यिक ग्रन्थ कवि, लेखक, वैयाकरण सभी जब कोई रचना करते हैं तो प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से वह अपनी तत्कालीन संस्कृति के प्रभाव से मुक्त नहीं रह पाते। उनकी रचनाओं पर संस्कृति का प्रभाव स्वतः ही परिलक्षित होता है, अतः

प्रत्येक युग, प्रत्येक स्थान एवं प्रत्येक कृति मैं रचनाकार की तत्कालीन संस्कृति का प्रभाव रहता है।

मैं अपने शोध–प्रबन्ध में आगमन प्रविधि का प्रयोग करते हुए शोध–कार्य करूँगी। जिसमें काशिकावृत्ति एवं वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के उदाहरणों के आधार पर सांस्कृतिक विवेचन तो किया ही जाएगा साथ ही काल–भेद के कारण परवर्ती ग्रन्थकारों ने उदाहरणों का भी स्वरूप परिवर्तन किया, उसका भी विश्लेषण किया जाएगा। काशिकाकार के **'परम्परागत', 'चिरन्तन'** तथा **'सर्ववृत्तिषूदाहृतत्वात्'** प्रयोगों के स्थान पर सिद्धान्तकौमुदी के नवीन प्रयोग छात्रों के सौकर्य हेतु हैं या राजनैतिक, सामजिक परिदृश्य के द्योतक मात्र हैं, शोध छात्रा का उद्देश्य इन कारणों का पता लगाना भी है। अतः अपने शोध के लिए मैंने **'काशिकावृत्ति एवं वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के उदाहरणों का सांस्कृतिक अध्ययन'** इस विषय का चयन किया है। एतदर्थ इस कार्य हेतु विद्वज्जन अनुमति एवं मार्गदर्शन प्रदान करें। मैं अपने इस सम्पूर्ण शोध–कार्य को निम्नलिखित रूप में विभक्त करूँगी।

अध्याय–विभाजन

प्रथम अध्याय– संस्कृत व्याकरण परम्परा का उद्भव एवं विकास तथा अध्येय ग्रन्थों का परिचयात्मक स्वरूप

१. संस्कृत व्याकरण परम्परा का उद्भव एवं विकास

२. वामन जयादित्य–काशिकावृत्ति

३. भट्टोजिदीक्षित– वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

द्वितीय अध्याय– संस्कृति, संस्कृति के तत्त्व एवं सांस्कृतिक अध्ययन की उपयोगिता

१. संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषा

२. संस्कृति के आधारभूत तत्त्व

३. सांस्कृतिक अध्ययन की उपयोगिता

तृतीय अध्याय– अध्येय ग्रन्थों में उदाहरणों का स्वरूप एवं महत्त्व

१. लौकिक उदाहरणों का स्वरूप

२. वैदिक उदाहरणों का स्वरूप

३. महत्त्व

चतुर्थ अध्याय– अध्येय ग्रन्थों में उदाहृत उदाहरणों में भौगोलिक एवं राजनीतिक परिवेश

१. उदाहृत उदाहरणों में भौगोलिक परिवेश

२. उदाहृत उदाहरणों में राजनीतिक परिवेश

३. निष्कर्ष

पञ्चम अध्याय– **अध्येय ग्रन्थों में उदाहृत उदाहरणों में सामाजिक परिवेश**

१. सामाजिक संस्थाएँ

२. वस्त्र एवं अलंकार

३. निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय– **अध्येय ग्रन्थों में उदाहृत उदाहरणों में आर्थिक परिवेश**

१. कृषि

२. व्यापार

३. निष्कर्ष

सप्तम अध्याय– **अध्येय ग्रन्थों में उदाहृत उदाहरणों में साहित्य एवं धर्मदर्शन**

१. शैक्षिक परिवेश

२. धार्मिक परिवेश

३. निष्कर्ष

उपसंहार– अध्ययन का निष्कर्ष

सन्दर्भग्रन्थानुक्रमणिका

सन्दर्भग्रन्थानुक्रमणिका

मूलग्रन्थ

१.अष्टाध्यायी (अनुवृत्ति–वृत्ति–उदाहरण वार्तिक–गणपाठादि सूचीसहिता)	महर्षि पणिनि	सम्पा०–डॉ० अभिमन्यु	प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली २०११
२. अष्टाध्यायी पदानुक्रम कोष	महर्षिपणिनि	सम्पा०–डॉ० अवनीन्द्र कुमार	परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली १९९६
३. अष्टाध्यायी सूत्रपाठः (प्रकरणनिर्देशसमन्वित)	महर्षिपणिनि	सम्पा०–डॉ० पुष्पादीक्षित	ज्ञानभारती पब्लिकेशन, दिल्ली २००९
४. काशिका (भाष्य–न्यास–पदमञ्जर्यादिसार समन्वित 'ज्योतिष्मती' हिन्दी व्याख्या सहित)	श्री वामन–जयादित्य	व्याख्या०–डॉ० रघुवीर वेदालङ्कार	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली २०१०
५. काशिकावृत्तिः (सोमलेखा–हिन्दीव्याख्यायुता)	श्रीवामन–जयादित्य	सम्पा०–पं० ईश्वरचन्द्र	चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली२०१०
६. लघुसिद्धान्तकौमुदी (माहेश्वरी नाम्नी विवेचनात्मक हिन्दी व्याख्या सहिता)	श्री वरदराज	सम्पा०–श्री महेश सिंह	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी १९६५

७.व्याकरणमहाभाष्य	महर्षि पतञ्जलि	सम्पा०—आचार्य मधुसूदन मिश्र	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी २००३
८. वार्तिकप्रदीपः	आचार्य कात्यायन	सम्पा०—डॉ० नरेश झा	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी २००८
९.वैयाकरणसिद्धान्त— कौमुदी (बालमनोरमा तत्त्वबोधिनीसहिता)	श्री भट्टोजिदीक्षित	सम्पा०—श्री गिरिधरशर्मा चतुर्वेद श्री परमेश्वरानन्द शर्मा विद्याभास्कर	मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, दिल्ली १९६१
१०.वैयाकरणसिद्धान्त— कौमुदी (बालमनोरमाव्याख्यासमलङ्कृता सैव दीपिकाख्यहिन्दीव्याख्ययोपेता च)	श्रीभट्टोजिदीक्षित	सम्पा०—श्रीगोपालदत्तपाण्डेय	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी २०१३

सहायक—ग्रन्थ—

११.पाठक, रामकुमार	अष्टाध्यायी और उनके भाष्यकार पतञ्जलि	क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली २००५
१२.वेदालङ्कार, रघुवीर	काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन	नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
१३.शर्मा, महेशदत्त	काशिकावैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्यो—स्तुलनात्मकमध्ययनम्	संस्कृत प्रगताध्ययनकेन्द्रम्, पुण्यपत्तन—विश्वविद्यालय, पुण्यपत्तनम्—७, १९७४
१४.अग्रवाल, वासुदेवशरण	पाणिनिकालीन भारतवर्ष	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

		१९९६
१५. अग्निहोत्री, प्रभुदयाल	पतञ्जलिकालीन भारतवर्ष	ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली द्वितीय सं०–२००७
१६.डॉ० ईश्वरप्रसाद	प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति तथा दर्शन	मीनू पब्लिकेशन, इलाहाबाद १९७९
१७.मिश्र, बलदेवप्रसाद	भारतीय संस्कृति	रामनारायण लाल विजयकुमार, इलाहाबाद १९६८
१८.गोयल, प्रीतिप्रभा	भारतीय संस्कृति	राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर २०००
१९.श्री नरेन्द्रमोहन	भारतीय संस्कृति	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली १९९७
२०.गैरोला, वाचस्पति	भारतीय संस्कृति और कला	उ0प्र0 ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ १९७३
२१.मीमांसक, युधिष्ठिर	संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास	रामलालकपूर टस्ट प्रेस, बहालगढ़, सोनीपत (हरियाणा) १९९४
२२.पाण्डेय, ओमप्रकाश	संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (द्वितीय खण्ड–वेदाङ्ग)	उ0प्र0 संस्कृत संस्थान, लखनऊ १९९७
२३.पाण्डेय, गोपालदत्त	संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास	उ0प्र0 संस्कृत संस्थान, लखनऊ २००९
२४.उपाध्याय, बलदेव	संस्कृत शास्त्रों का इतिहास	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, २०१०
२५. Majumdar, R.C.	Ancient India	Motilal Banarsidas Publishers, Delhi 1994

२६. Kane, P.V	History of Dharmshastra	Bhandarkar Oriental Research Institute, pune 2006
२७. Khera, Krishna lal	Index to History of Dharmsastra : By Pandurang Vaman Kane (Comprehensive guide to Hindu rites and rituals)	Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd. 1997
२८. Majumdar, R.C.	The History and Culture of the Indian people	Bhartiya Vidya Bhavan, Mumbai, 1951
२६.Cardona, George	Recent Research in Paniniyan studies	Eastern Book Linkers 1999

अनुसंधान प्रविधि के लिए–

३०.अनुसंधान परिचय	पारसनाथ राय, सी०पी०राय	लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, १९७३
३१.अनुसन्धान विधियाँ	डॉ०डी०एन० श्रीवास्तव	साहित्य प्रकाशन, आगरा

शब्दकोश

३२.पारिजात कोशः	डॉ० ईश्वरचन्द्र शर्मा	परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली, २००४
३३.संस्कृत हिन्दी कोश	वामन शिवराम आप्टे	मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली १९६६, १९६९
३४.संस्कृत	स्वर्गीय द्वारका	रामनारायण लाल

शब्दार्थकौस्तुभ	प्रसाद शर्मा, तथा पण्डित तरिणीश झा,	इलाहाबाद १९५७

Websites-

1-Shodhganga. inflibnet.ac.in

2-www.sanskrit. nic.in/theses-modified/DirectoryV/Index.htm

3-pdfsearch. asia/shodhgangotri.html